इस दोहे का अर्थ है –

"तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठे और मधुर वचनों से चारों ओर सुख फैलता है। मधुर वाणी किसी को भी अपने वश में करने का एक मंत्र समान है। इसके विपरीत, कठोर और कटु वचन से लोगों के मन दुःखी होते हैं, इसलिए उनसे बचना चाहिए।"

जिस व्यक्ति में आत्मबल, सम्मान और तेज नहीं होता, वह समाज में सम्मान नहीं पाता। जैसे बुझी आग केवल राख बनकर रह जाती है और किसी को लाभ नहीं देती, वैसे ही निर्बल और निर्भीक व्यक्ति दूसरों के लिए हानिकारक भी बन सकता है। इसलिए व्यक्ति को तेजस्वी और आत्मसम्मानी बनना चाहिए।

"तुलसी कहते हैं कि सच्चा साथी वही होता है जो विपत्ति (कठिन समय) में साथ देता है।" ऐसे साथियों में विद्या (ज्ञान), विनय (नम्रता), विवेक (समझ-बूझ), साहस (हिम्मत), सुकृति (सत्कर्म), सुसत्यव्रत (सत्य के प्रति अडिग रहना) और श्रीराम पर अटूट भरोसा — ये सब गुण सच्चे साथी हैं।

“जिस व्यक्ति के मन में काम (वासनाएं), क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार (मत) बसते हैं, वह चाहे पंडित हो या मूर्ख – तुलसीदास कहते हैं, दोनों समान हैं।”